

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षकों के लिए 'योग्यता आधारित शिक्षण-अधिगम एवं मूल्यांकन पद्धतियों' पर राष्ट्रीय संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित किया।

शिक्षकों के जीवन में निरंतर सीखने के महत्व और स्वास्थ्य पेशेवरों की दुनिया में बढ़ती प्रतिस्पर्धा पर प्रकाश डालते हुए, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के दंत चिकित्सा संकाय ने दिनांक 22 - 23 अक्टूबर 2024 को स्वास्थ्य व्यवसायों के शिक्षकों के लिए 'योग्यता आधारित शिक्षण-शिक्षण और मूल्यांकन पद्धतियों' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संकाय विकास कार्यक्रम की मेजबानी की जिसमें पेशेवरों की अगली पीढ़ी को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की बेहतरी के लिए स्वास्थ्य सेवा के विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षकों को एक साथ एक मंच पर लाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य स्वास्थ्य पेशेवरों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार स्वास्थ्य पेशेवरों की शिक्षा में तेजी से हो रहे बदलावों के अनुरूप नवीनतम योग्यता-आधारित शिक्षण और मूल्यांकन पद्धतियों से लैस करना था और शिक्षाप्रद शिक्षण और योग्यता-आधारित पाठ्यक्रम के बीच की खाई को खत्म करने, शिक्षकों को जिज्ञासा, नवाचार और आजीवन सीखने के माहौल को बढ़ावा देने के साधनों से सशक्त बनाने, छात्रों को भविष्य के स्वास्थ्य पेशेवरों के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करना था।

कार्यक्रम में दंत चिकित्सा, चिकित्सा, फिजियोथेरेपी और नर्सिंग क्षेत्रों से वरिष्ठ और कनिष्ठ संकाय सदस्यों सहित 36 पेशेवरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र कुरान के पाठ से हुई, जिसके उपरांत दंत चिकित्सा संकाय की डीन, प्रो. केया सरकार ने स्वागत भाषण दिया, जिन्होंने कार्यक्रम के लिए समय निकालने हेतु अतिथियों और प्रतिनिधियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा उन्हें जामिया के गौरवशाली इतिहास, अकादमिक उत्कृष्टता और दंत चिकित्सा संकाय की रैंकिंग एवं समाज में इसके योगदान के बारे में बताया।

इसके उपरांत मुख्य अतिथि डॉ. वेदप्रकाश मिश्रा, जो चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक दिग्गज हैं, डॉ. बी. सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता जो डेटा मेघे उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, वर्धा के प्रो-चांसलर और मुख्य सलाहकार हैं, उन्होंने एक ज्ञानवर्धक उद्घाटन भाषण दिया। 'भारतीय स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा का वैश्वीकरण - आगे का रास्ता' शीर्षक वाले अपने वक्तव्य में उन्होंने भारत में शिक्षा नीतियों के विकास के बारे में जो विश्वकोशीय वर्णन किया, जिसने दर्शकों को शिक्षा के परिवर्तनकारी मॉडल को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्वास्थ्य सेवा शिक्षकों के प्रशिक्षण में खामियों को भी रेखांकित किया, इस तथ्य को दोहराते हुए कि शिक्षकों को मंच पर ऋषि होने की जरूरत नहीं है, बल्कि मार्गदर्शक की जरूरत है। उनके संबोधन ने उस समय गहरा प्रभाव छोड़ा जब उन्होंने कोठारी आयोग का हवाला देते हुए यह कहा कि 'किसी राष्ट्र का भाग्य उसकी कक्षाओं में बनता है'।

व्याख्यान के उपरांत जामिया के माननीय कुलपति, प्रो. मोहम्मद शकील ने मुख्य अतिथि के भाषण की सराहना की और अपनी इच्छा व्यक्त की कि इस तरह के गहन विवरण को भावी पीढ़ियों के लिए संचित किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य व्यवसायों की शिक्षा में पेशेवर विकास के लिए दंत चिकित्सा संकाय की प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए, उन्होंने इस क्षेत्र में जीवाश्मीकरण के खतरों और नियमित संकाय विकास कार्यक्रमों के महत्व पर बल दिया जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षक इस क्षेत्र में नवीनतम शिक्षण पद्धतियों से अपडेट रहें। समारोह का समापन प्रो अनुराधा शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसके बाद भारतीय राष्ट्रगान हुआ।

दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रख्यात शिक्षकों, प्रो. पूनम सूद लूबा, निदेशक-प्रोफेसर और प्रमुख और संयोजक, एनएमसी क्षेत्रीय केंद्र चिकित्सा शिक्षा इकाई, एमएएमसी, नई दिल्ली और प्रो. पुष्पांजलि कृष्णाप्पा, अध्यक्ष-स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा इकाई, दंत चिकित्सा विज्ञान संकाय, रामैया यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा संचालित व्यावहारिक व्याख्यान और इंटरैक्टिव चर्चाएँ और गतिविधियाँ शामिल थीं। शिक्षण-अधिगम के विभिन्न अंग जैसे कि मनोवृत्ति डोमेन, बड़े और छोटे समूहों के लिए इंटरैक्टिव शिक्षण के सिद्धांत, योग्यता-आधारित शिक्षा को लागू करने की चुनौतियाँ, नैतिक उलझनों को संबोधित करना और संचार कौशल को बढ़ाना, और स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा में उनके अनुप्रयोग को रोल प्ले और समूह चर्चाओं के माध्यम से संबोधित किया गया। नवीन शिक्षण-अधिगम विधियों के एकीकरण और छात्र के सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए परिणाम-आधारित आकलन के डिजाइन पर विशेष ध्यान और बल दिया गया। कार्यक्रम का समापन एक समापन सत्र के साथ हुआ, जिसमें संसाधन संकाय सदस्यों, आयोजन टीम और स्वयंसेवकों के योगदान और प्रतिनिधियों की भागीदारी को स्वीकार किया गया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम को प्रतिभागियों द्वारा अच्छी तरह से अर्जित किया गया था और सराहा गया जो कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों के साथ साझा किए गए फीडबैक फॉर्म द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट हुआ। संकाय विकास कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक समन्वय प्रो. इरम परवेज़, प्रो. अनुराधा शर्मा, प्रो. शबीना सचदेवा, प्रो. रिजवाना मलिक, प्रो. अनुप्रिया वाधवा और प्रो. नुपुर गुप्ता की टीम द्वारा किया गया।

जनसंपर्क कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया